शोध प्रबन्ध की रुपरेखा

सिरमौर जिले के धार्मिक मेलों के भक्ति संगीत आयोजनों में प्रयुक्त लोक वाद्ययंत्रों की भूमिका

इटरनल विश्वविद्यालय के संगीत विभाग की

पी॰एच॰डी॰ उपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध की रुपरेखा

निर्देशिका:

प्रो॰ एवं डीन (श्रीमती) पूर्वी लुनियाल

अकाल कॉलेज ऑफ आर्टस एवं सोशल साइन्सेस

इटरनल विश्वविद्यालय

बड़ू-साहिब

शोधकर्त्री

नीलम कुमारी

संगीत विभाग

इटरनल विश्वविद्यालय

हिमाचल प्रदेश - 173101

प्रस्तावना

हिमाचल, हिमाच्छादित ऊँचे–नीचे पर्वतों, तीव्र गामिनी नदी–नालों, वन–उपवन से सजी–सँवरी धरा पर असंख्य मनमोहक वादियों का भूभाग है। इन वादियों में टेढ़ी–मेढ़ी पगडण्डियाँ, सीढ़ीनुमा खेत और छोटे–छोटे गांव प्राचीन वास्तुकला का अनूठा उदाहरण है। इन वादियों में बसे गावों में धार्मिक आस्था के प्राचीन मन्दिर, लोक शैली की मनमोहक संरचनाएँ हैं। इन मन्दिरों के इर्द – गिर्द रीति – रिवाज, खान–पान, पहनावा, न्याय, उपचार, सहकारिता, विभिन्न व्यवस्थाएँ व सांस्कृतिक व धार्मिक परम्पराएँ अतीत की समृद्ध धरोहर है। प्रातःकाल से सायंकाल, बसन्त से शिशिर, जन्म से मृत्यु तक के सभी संस्कारों व रस्मों रिवाजों का नियमित रूप बिम्बित है।

इन मन्दिरों के व्यवस्थापकों को 'देव कारदार' कहते हैं। इन देवताओं के प्रांगण में वर्ष भर के मौसमों के अनुसार तीज–त्यौहार, मेले, देवता का जागरण होता है, जिसमें लोकवाद्य उस काल और पर्व को और भी आकर्षक बनाते हैं। हिमाचल प्रदेश की प्रत्येक वादी में इन मेलों का आयोजन लोकवादन के साथ होता है, जैसे– चम्बा का मिंजर मेला, तो मण्डी की शिवरात्रि, कुल्लू का दशहरा, रामपुर का लवी मेला, बिलासपुर का नलवाड़ी मेला, सिरमौर का रेणुका मेला तथा इसी प्रकार नौहराधार तहसील के दो गाँव देवना और चाढ़ना में ऐतिहासिक शिरगुल और बिजट देवता के मन्दिरों में मेले के दौरान लोकवाद्यों को बजाने का आकर्षण है। एक तरफ जहाँ इन

लोकवाद्यों के बजने से आकर्षण उमड़ता है वहीं दूसरी ओर ये पूजा, श्रद्धा और आस्था का विषय भी है।

इन उत्सवों का आयोजन युगों का पारम्परिक क्रम है, जिसके अनुसार ये मेले व पर्व, सदियों की परम्पराओं के अनुसार मनाए जाने जरूरी हैं। दूसरा पहलू मौसमी माना गया है। मौसम के लिए देव यज्ञ किए जाते हैं जहाँ मेले का रूप देखने को मिलता है और देव आस्थाओं के अनुकूल मेलों का आयोजन किया जाता रहा है। इन मेलों में लोक वादक अपने वादन द्वारा भक्ति रस की अनुभूति कराते हैं।

हिमाचल प्रदेश के प्रत्येक जिले में धार्मिक मेलों का आयोजन होता रहता है, जो युगों की परम्पराओं का श्रद्धा भाव से निर्वाहन माना गया है।

सिरमौर जिला, हिमाचल प्रदेश के 12 जिलों में से एक है। यह जिला प्रदेश का ऐसा जनपद है जो अतीत में सदियों से रियासत थी, इस रियासत की राजधानी नाहन में रही है। आज भी यथावत वहीं जिला मुख्यालय बना है। "सिरमौर" शब्द का अर्थ है :— सिर का ताज। सिरमौर जिले में 8 तहसीलें हैं, जिनके नाम इस प्रकार है :-

1. ददाहू	2. नाहन
3. पांवटा साहिब	4. पच्छाद
5. राजगढ़	6. रेणूका
7. शिलाई	8. नौहराधार

गिरी नदी सिरमौर जनपद को दो भागों में विभक्त करती है, गिरीवार तथा गिरीपार। जहाँ देवी तथा देवताओं के मन्दिर हैं और मेलों, पर्वों और उत्सवों में यहाँ लोकवादन जन आकर्षण का केन्द्र है। यही मेले और उत्सव श्रद्धा तथा भक्ति का संचारण करते हैं। फलस्वरूप श्रद्धा, आस्थाओं से अभिभूत लोग इन पर्वों को मनाने के लिए दूर–दूर से आते हैं तथा देव–परम्पराओं का निर्वाहन, श्रद्धापूर्ण भाव से करते हैं, जिनमें लोक वादन केन्द्र बिन्दु रहा है। इन लोक वाद्य यन्त्रों का निर्माण व मन्दिर में स्थापना विधिवत लोक शैली के मंत्रों से की जाती है। ये वाद्य यन्त्र देवता के प्रतिबंधित "हाशे" लोक भाषा में माने जाते हैं। इनकी पवित्रता भी मूर्तियों के समान पवित्र मानी जाती है।

माँ रेणुका, परशुराम, शिरगुल, भंगायणी, बिजट, ठोड़ निवाड़ के मन्दिर, पाँवटा साहिब के तथा बड़ू–साहिब के गुरूद्वारे तथा मन्दिर धर्म–निरपेक्षता के प्रतीक हैं। इन मन्दिरों में ढ़ोल, नगारा (नगाड़ा), शहनाई, रणसिंघा, करनाल, हुड़क, खंजरी, शंख, दमामटू वाद्य यन्त्र होते हैं। इन मन्दिरों की परम्पराओं के अनुकूल मेले व पर्व वाद्य ध्वनि के साथ शुरू होते हैं और सभी बजने वाले वाद्य उस समय विशेष की लोक विधाओं को दर्शाते हैं।

सिरमौर में लगभग सभी छोटे–बड़े गावों में त्यौहारों तथा पर्वों में लोक वाद्ययन्त्रों पर गाँववासी नृत्य कर अपनी भक्तिभाव तथा श्रद्धा को व्यक्त करते हैं। धार्मिक पर्वों में बजने

वाले वाद्य यन्त्रों को कुशल कलाकारों के द्वारा बजाया जाता है। जब ये वाद्ययन्त्र बजाए जाते हैं, तो लोग अपना सबकुछ भुलाकर श्रद्धा भाव से थिरकते तथा नृत्य करने लगते हैं। यहाँ लगभग प्रत्येक गाँव में उनके देवता का मन्दिर होता है। इसी स्थान पर सभी लोग इकट्ठे होकर अपने गीतों, वाद्यों, नृत्य के द्वारा अपने उद्गारों से देवताओं को प्रसन्न करने के लिए उस पर्व को मनाते हैं।

सिरमौर की धरती को देव भूमि कहा गया है। इस जिले की सीमा पूर्व में उत्तर प्रदेश तथा उतराखण्ड़, पश्चिम में पंजाब के साथ, उत्तर में शिमला, ठियोग, चौपाल तथा सोलन तथा दक्षिण में हरियाणा व उत्तर प्रदेश के साथ लगती है।

सिरमौर जनपद में जहाँ एक और बहुरंगी लोक–संस्कृति का परिदृश्य नजर आता है वही “शैव” और “शक्ति” की पूजा व्यवस्थाएं इन तीज त्यौहारों की गरिमा को समेटे हुए हैं। लोकवाद्यों की मनमोहक ध्वनियां इन मेलों, पर्वों को भक्तिरस का सा रंग देती हैं।

इन मन्दिरों के प्राँगण में लोक पारम्परिक तथा रीति–रिवाजों के आधार पर मेलों का आयोजन किया जाता है, जिसमें हजारों की संख्या में लोग उपस्थित होकर अपने–अपने परिवार की सुख–समृद्धि की प्रार्थना करते हैं।

सिरमौर जिले में ऐसे कई धार्मिक स्थल हैं, जो अपने आप में बहुत महत्व रखते हैं। फिर भी इस जिले पर इतना अधिक काम नहीं हुआ है। मैं खुद भी सिरमौर जिले से सम्बन्ध

रखती हूँ तथा संगीत से सम्बन्धित हूँ। इस जिले के सम्बन्ध में मैने यह पाया कि बहुत से धार्मिक स्थान जैसे गुरूद्धारे तथा मन्दिर ऐसे है जो अपना एक विशेष महत्व रखते हुए भी आम लोगों की नजर से दूर हैं तथा जहां पर सभी लोगों का आना जाना कठिन हैं। मैं ऐसे स्थानों पर लगने वाले धार्मिक मेले तथा उनके आयोजनों में प्रयुक्त लोकवाद्ययत्रों के महत्व तथा सौन्दर्य को विश्वपटल पर रखना चाहती हूँ। शोधकर्ता होने के नाते मुझे यह मौका मिला। इस विषय से सम्बन्धित अपनी रूचि को अपनी निर्देशिका महोदया के सामने रखा तथा बहुत विचार–विमर्श करने के पश्चात शोधकार्य हेतु जिस विषय का चयन किया गया तथा सभी निष्कर्ष के अनुरूप वह इस प्रकार है:–

"सिरमौर जिले के धार्मिक मेलों के भक्ति संगीत आयोजनों में प्रयुक्त लोकवाद्य यंत्रों की भूमिका"

इस विषय का गहन अध्ययन व विधिवत शोध के लिए इसे छः (6) अध्यायों में विभाजित किया गया है, ताकि विषय से जुड़ी सभी विद्याओं की सही व्याख्या की जा सके। इसका वर्णन अध्यायों के अन्तर्गत संक्षिप्त रूप में इस प्रकार है:—

1. **प्रथम अध्याय:**

सिरमौर जिले का इतिहास (अतीत व वर्तमान स्थिति)—

इस अध्याय में सिरमौर जिले की अतीत में क्या स्थिति थी तथा वर्तमान में इस जिले में कितना परिर्वतन

आया है, यह बताया जाएगा तथा साथ ही लोक परम्पराओं का अतीत की मूल विधाओं के अनुकूल किस तरह से पोषण, संरक्षण, संम्वर्धन प्राप्त है यह बताया जाएगा। इसी प्रकार इस क्षेत्र में जिन (संकलित) लोक मनीषियों ने कार्य किया है तथा आज के परिपेक्ष में हमारी इस हेतु क्या अपेक्षाएं हैं, विभिन्न परिर्वतनों के साथ–साथ श्रुति और स्मृति से ये संस्कृति कितनी बची है उसका अनुसंधानात्मक विश्लेषण तथा प्रलेखन विभिन्न क्षेत्र के कारदारों व परम्पराओं का निर्वाहन करने वाले बुजुर्गों से सम्पर्क साधकर साक्षात्कार किया जाना, विषय की पुष्टि का विषय रहेगा।

2. **द्वितीय अध्याय:**

लोक वाद्यों की उत्पति तथा विकास–

इस अध्याय में लोक वाद्यों की उत्पति तथा विकास कैसे हुआ? तथा किस प्रकार इन वाद्यों का प्रयोग मनुष्य द्वारा अपनी धार्मिक भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया गया है? इसके अतिरिक्त लोक वाद्यों का लोक–विधाओं में किस प्रकार चलन है, आदि के बारे में बताया जाएगा।

3. **तृतीय अध्यायः**

जिले के धार्मिक स्थल तथा वहाँ आयोजित होने वाले प्रमुख मेले–

इस अध्याय के अन्र्तगत सिरमौर जिले के धार्मिक स्थल कौन–कौन से हैं? तथा स्थल कहाँ–कहाँ स्थित है? उनके नाम तथा यह स्थल किन–किन देवी–देवताओं के कारण प्रसिद्ध है तथा इन धार्मिक स्थलों पर आयोजित होने वाले मेलों के बारे में भी वर्णन किया जाना है। इसके साथ यह भी खोज की जाएगी, कि ये मेले तथा इनको मनाने की परम्पराएं कितनी प्राचीन है और आज इन मेलों को आदिकालीन परम्पराओं के अनुकूल लोगों का मनाने का चलन यथावत है (जैसा पहले चला आ रहा है) या नहीं यह बताया जाएगा, साथ ही इन मेलों में वाद्य–विद्याओं का अध्ययन कर वर्णन किया जाएगा।

4. **चर्तुथ अध्याय :**

मेलों के अन्र्तगत प्रयुक्त लोकवाद्यों का वर्गीकरण तथा उनकी विशिष्ट वादन शैली–

इस अध्याय में सिरमौर जिले के प्रमुख धार्मिक मेलों में प्रयुक्त परम्पराओं के अनुसार लोकवाद्यों का वर्गीकरण किया जाएगा तथा कौन सा वाद्य किस श्रेणी में आता है यह बताया जाएगा। अर्थात लोक वाद्यों को तत्, घन,

अवनद्ध तथा सुषिर आदि के अर्न्तगत वर्गीकरण किया जाना अपेक्षित है। इसके साथ इनकी मौलिकता कितनी प्राचीन है, तथा देवी के साथ अलग व देवता के साथ अलग वाद्ययन्त्रों से भक्ति रस की कैसे अभिव्यंजना करते हैं तथा इन वाद्यों में बजने वाली तालों व बजाने के पर्व तथा समय का भी वर्णन किया जाएगा।

5. **पंचम अध्याय :**

भक्ति रस में प्रयुक्त लोकवाद्यों का सांस्कृतिक महत्व व देव परम्परा की पराकाष्ठा —

इस अध्याय में धार्मिक मेलों के अर्न्तगत जितने भी भक्तिभाव को व्यक्त करने वाले लोक वाद्य यन्त्र हैं उनके सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डाला जाएगा तथा यह बताया जाएगा कि किस प्रकार ये वाद्य देव–परम्पराओं से सम्बन्ध रखते है, जैसे बिशू मेले में रौद्र ताल का वादन, (रथैवळा वाद्य के साथ) नर्तक व दर्शकों को किस तरह उत्साह, हौंसला व वीरता का संचारण कराता हैं। इसी प्रकार जब बैसाखी पर्व में तन्त्री साज के साथ शब्द कीर्तन करते हैं तो भक्तिभाव, उत्साह तथा वीरता का भाव उत्पन्न होता है। जब देवता के गूर को खेल आती हैं, उस समय “धरेवणी” ताल से शरीर में कम्पन कैसे आती है तथा भक्ति रस का संचार कैसे पैदा होता है? इसे वाद्ययन्त्रों के वादन में खोजना,

खोज का विषय रहेंगा। यही नहीं दर्शकों को भी सिहरन होती है और उन्हें इस अनुभूति का क्या प्रभाव व महत्व होता है आदि के बारे में बताया जाएगा। अर्थात वाद्ययन्त्र के द्धारा उत्पन्न भक्ति, उत्साह तथा वीरता आदि भाव किस तरह देव परम्परा से जुड़े हैं, शोध का विषय रहेगा।

6. **षष्टम अध्याय :** साक्षात्कार

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

शोध प्रविधि:

इस शोध कार्य को पूरा करने के लिए लोकवाद्यों की कार्यशाला जहाँ–जहाँ पर भी लगेगी वहां जाकर जानकारी प्राप्त की जाएगी। इसके अलावा सिरमौर जिले के प्रमुख धार्मिक स्थलों पर जाया जाएगा तथा वहां के देव परम्पराओं से जुड़े ग्रामवासियों से जानकारी उपलब्ध की जाएगी। इसके अतिरिक्त देव–परम्पराओं से जुड़े पुश्तैनी वादक कलाकारों से विधिवत इससे (एतद) सम्बन्धित सूचनाएँ एकत्रित की जाएगी, ताकि शोध कार्य को सार्थक व तथ्यपूर्ण दिशा दी जा सके। वास्तव में इन लोक वाद्यों के वादक कलाकार और ये विद्याँए विलुप्त होती जा रही हैं तथा इसके संरक्षण व सर्वधन के लिए भी पुश्तैनी लोक कलाकारों से सम्पर्क साधना शोधार्थी का उद्देश्य रहेगा।

इसके अतिरिक्त जिन विद्धानों ने लोकतालों पर व लोकसंगीत पर शोध किए हैं, उनकी भी राय लेना मेरा उद्देश्य रहेगा। हिमाचल प्रदेश लोक कला संस्कृति भाषा अकादमी के पुस्तकालयों तथा सिरमौर के प्रमुख पुस्तकालयों में ऐसे विद्धानों की पुस्तकों का अध्ययन व समीक्षात्मक पठन कर अपने विषय से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करना शोधार्थी उद्देश्य रहेगा। इसके साथ–साथ स्थानीय टी०वी०, रेडियो के माध्यम से तथा इन्टरनेट और अखबारों में छप चुके तथा छप रहे लेखों से भी सहायता ली जाएगी।

----------0---------